Siddharth University In News 07.08.2021

विश्वविद्यालय में हुआ ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन

प्रखर विकास

कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के मंशानुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विभिन्न आयामों को लेकर ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया गया। छठवें दिन "उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित तथा शिक्षकों में व्यवसायिक गुणवत्ता सम विकास" विषय पर व्याख्यान संपन्न हुआ।

व्याख्यान के दौरान जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली के परिसियन भाषा विभाग के डीन तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मसौदा समिति के सदस्य प्रो. मजहर आसिफ ने कहा कि भारत की गौरवशाली परंपरा एवं समृद्ध इतिहास रहा है। भारत के जीवन दृष्टि में पृथ्वी के सभी प्राणियों के प्रति सद्भाव की भावना रही है। भारत में हमेशा ज्ञान संस्कृति और धर्म मार्गदर्शक की भूमिका में रहे हैं।इसी कारण से राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मूलाधार में नैतिक मूल्य भारतीय संस्कृति परंपरा और आधुनिक रोजगार परक पाठ्यक्रमों को सम्मिलित कर श्रेष्ठ और समृद्ध भारत के निर्माण की नींव रखी गयी है । उच्च शिक्षा में गुणवत्ता की पहली शर्त है कि प्राथमिक शिक्षा में आमूलचूल सुधार करते हुए उसे गुणवत्ता युक्त बनाए जाए। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी जिस भाषा में सोचता है जिस सामाजिक परिवेश में रहता है उसे कार्य करने और समझने की वही परिस्थितियां मिलनी चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा पर अत्यधिक बल दिया गया है। अब विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त कर सकता है। जिससे विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को अध्ययन करने में बहुत सुविधा मिलेगी। सामान्य तौर पर यह देखा जाता है की माध्यमिक स्तर तक विद्यार्थी हिंदी मीडियम में अध्ययन करके आता है और विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में उसे अंग्रेजी भाषा में पढ़ना होता है, जो एक दुरूह कार्य है।ऐसे में मातृभाषा की शिक्षा विद्यार्थी को अपने व्यक्तित्व विकास और कौशल ज्ञान को बढ़ाने का अवसर प्रदान करने वाली है। प्रबंधन तकनीकी व्यवसायिक एवं चिकित्सा की शिक्षा के साथ भाषा की भी शिक्षा दी जानी चाहिए, क्योंकि शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत उसे किसी भी क्षेत्र में कार्य करने का अवसर मिले तो कोई असुविधा न हो। कौशल विकास केंद्र की स्थापना विश्वविद्यालयों में बहुत आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति इसी हेतु प्रेरणा देने वाली है कि सामान्य पाठ्यक्रमों के साथ-साथ कौशल विकास के भी पाठ्यक्रम बनाया जाए। सीधे तौर पर कहें तो हाथ में ज्ञान से ही भारत का विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति में ऐसा नहीं है विद्यार्थी अपनी सुविधा के अनुसार पढ़ सकता है फिर अपने परिस्थिति के अनुसार पढ़ाई छोड़ सकता है और पुनः उसमें वह एंट्री पा सकता है। इसी तरह से पाठ्यक्रम डिजाइन में अपने देश की समृद्ध गौरवशाली परंपरा को जोड़कर उसे आधुनिक बनाया जा सकता है। पुस्तकालय समृद्ध होना चाहिए। तकनीकी संसाधनों से युक्त होना और दुनिया के बड़े लाइब्रेरी और से संबंध होना चाहिए। शिक्षक और विद्यार्थी को पुस्तकालय में पढ़ने की प्रवृत्ति विकसित करने के लिए प्रयास किया जाना चाहिए। कार्यक्रम में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव ने कहा है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति ज्ञान कौशल के उत्थान की नीति है। रोजगार परक पाठ्यक्रम के माध्यमों से माध्यम से युवाओं को रोजगार के अवसर पढ़ाई के साथ साथ मिल सकता हैं। उन्होंने कहा कि किसी राष्ट्र की गुणवत्ता उसकी शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। शिक्षा की गुणवत्ता उसके शिक्षक की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। इस प्रकार शिक्षक की गुणवत्ता किसी भी राष्ट्र की गुणवत्ता का निर्धारित करने का मुख्य आधार माना जाता है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति वास्तव में भारत के वर्तमान और भविष्य की नीव रखने वाली है। 21वीं सदी में हम सब शिक्षकों के पास पुनीत अवसर है जो गौरवशाली भारत की पुनर्स्थापना करने का मार्ग प्रशस्त कर सकतें है। उन्होंने कहा कि इंटरनेट उच्च शिक्षण संस्थानों में अपरिहार्य है।

कार्यक्रम में विषय प्रस्तावना राष्ट्रीय शिक्षा नीति विश्वविद्यालय परिसर के नोडल अधिकारी एवं अधिष्ठाता कला संकाय प्रोफेसर हरीश कुमार शर्मा ने प्रस्तुत करते हुए कहा की अंतर विषयक शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षक और विद्यार्थियों को अपने ज्ञान और कौशल रूचि के अनुसार निर्मित और निश्चित करने का अवसर प्रदान करती है। जब तक शिक्षक दक्ष नहीं होगा स्वभाविक है विद्यार्थी को भी वह ज्ञान का पथ नही पढ़ा सकता। कार्यक्रम में बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ के शिक्षा विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर राजशरण शाही की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम संयोजक डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने व आभार ज्ञापन सहसंयोजक डॉ. सरिता सिंह ने किया। तकनीकी सहयोग सत्यम दीक्षित एवं अतुल रावत ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक तथा संबद्ध महाविद्यालयों के शिक्षक व छात्र-छात्राएं जुड़े रहे।

संस्कृति, परंपरा और इतिहास का भंडार है शिक्षा नीति

जागरण संवाददाता, सिद्धार्थनगर : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मसौदा समिति के सदस्य व जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली के प्रो. मजहर आसिफ ने शुक्रवार को वर्चुअल व्याख्यानमाला कहा विद्यार्थी जिस भाषा में सोचता है, जिस सामाजिक परिवेश में रहता है, उसे कार्य करने और समझने की वही परिस्थितियां मिलनी चाहिए। नई शिक्षा नीति में संस्कृति, परंपरा और इतिहास का संपूर्ण ज्ञान मिलेगा। ऐसे विद्यार्थी जो परिस्थितिवश कुछ समय के लिए पढ़ाई छोड़ देते हैं, अब वह अपनी सुविधा के अनुसार पढ़ सकते हैं।

कार्यक्रम

- व्याख्यान श्रृंखला के छठवें दिन विशेषज्ञों ने रखे अपने विचार
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनछुए पहलुओं को विस्तार से बताया

वर्चुअल व्याख्यान माला मे अपने विचार रखते सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो हरि बहादुर श्रीवास्तव मध्य में ● जागरण

वह शुक्रवार को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की ओर से चल रहे व्याख्यान श्रृंखला के छठवें दिन अपने विचार रख रहे थे। उच्च शिक्षा में गुणवत्ता की पहली शर्त है कि प्राथमिक शिक्षा में आमूलचूल सुधार करते हुए गुणवत्ता युक्त बनाए जाए। शिक्षा नीति में मातृभाषा पर बल दिया गया है।

इससे ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को सुविधा मिलेगी। विद्यार्थी को व्यक्तित्व विकास और कौशल ज्ञान को बढ़ाने का अवसर मिलेगा। कौशल विकास केंद्र की स्थापना विश्वविद्यालयों में आवश्यक है। छोटे पाठ्यक्रम निर्धारित कर शिक्षा के साथ रोजगार प्राप्त करने दक्ष बनाया जा सकता है।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव ने कहा यह ज्ञान व कौशल के उत्थान की नीति है। किसी राष्ट्र की गुणवत्ता उसकी शिक्षा स्तर पर निर्भर करती है। इंटरनेट उच्च शिक्षण संस्थानों में अपरिहार्य है। विश्वविद्यालय के नोडल अधिकारी प्रो. हरीश कुमार शर्मा ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से संस्थान के गुणवत्ता को उठाया जा सकता है। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ के शिक्षा विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर राजशरण शाही ने भी विचार रखे। संचालन कार्यक्रम के संयोजक डा. अविनाश प्रताप सिंह ने किया। डा. सरिता सिंह, सत्यम दीक्षित, अतुल रावत आदि मौजूद रहे।

'नई शिक्षा नीति में रोजगार पाठ्यक्रमों का समावेश सर्वश्रेष्ठ'

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में व्याख्यान का छठा दिन

संवाद न्यूज एजेंसी

कपिलवस्तु। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली के परिसियन भाषा विभाग के डीन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मसौदा समिति के सदस्य प्रो. मजहर आसिफ ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मूलाधार में नैतिक मूल्य भारतीय संस्कृति परंपरा और आधुनिक रोजगार परक पाठ्यक्रमों को सम्मिलित कर श्रेष्ठ और समृद्ध भारत के निर्माण की नींव रखी गई है।

प्रो. आसिफ शुक्रवार को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विभिन्न आयामों को लेकर व्याख्यान श्रृंखला के छठवें दिन 'उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित तथा शिक्षकों में व्यवसायिक गुणवत्ता सम विकास' विषय को संबोधित कर रहे थे। पाठ्यक्रम में अपनी संस्कृति परंपरा इतिहास के साथ-साथ समसामयिक व्यवसायिक दृष्टिकोण का समन्वय किया जाना राष्ट्रीय शिक्षा नीति में गुणवत्ता सुनिश्चित का एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है।

अध्यक्षीय संबोधन में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति ज्ञान कौशल के उत्थान की नीति है। रोजगार परक पाठ्यक्रम के माध्यमों से माध्यम से युवाओं को रोजगार के अवसर पढ़ाई के साथ साथ मिल सकता हैं। विषय प्रस्तावना राष्ट्रीय शिक्षा नीति विश्वविद्यालय परिसर के नोडल अधिकारी एवं अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. हरीश कुमार शर्मा ने प्रस्तुत किया। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ के शिक्षा विभाग के एसोसिएट प्रो. राजशरण शाही की गरिमामय उपस्थिति रहीं। संचालन डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने किया। आभार ज्ञापन सहसंयोजक डॉ. सरिता सिंह ने जताया। सत्यम दीक्षित, अतुल रावत की भूमिका अहम रहीं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आन लाइन आयोजित हुआ व्यख्यान

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के मंशा अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विभिन्न आयामों को लेकर व्याख्यान श्रृंखला के छठवें दिन ₹उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित तथा शिक्षकों में व्यवसायिक गुणवत्ता सम विकास₹ विषय पर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली के परिसियन भाषा विभाग के डीन तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मसौदा समिति के सदस्य प्रोफेसर मजहर आसिफ ने कहा कि भारत की गौरवशाली परंपरा एवं समृद्ध इतिहास रहा है। भारत के जीवन दृष्टि में पृथ्वी के सभी प्राणियों के प्रति सद्भाव की भावना रही है।भारत में हमेशा ज्ञान संस्कृति और धर्म मार्गदर्शक की भूमिका में रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा पर अत्यधिक बल दिया गया है। अब विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त कर सकता है। कौशल विकास केंद्र की स्थापना

विश्वविद्यालयों में बहुत आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में गुणवत्ता बढ़ाने के लिए मल्टीप्ल एंट्री और मल्टीप्ल एग्जिट का अवसर विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्वतंत्रता है। परीक्षा और मूल्यांकन प्रणाली में भी पारदर्शिता होनी चाहिए शिक्षक चयन में भी पारदर्शिता अपरिहार्य है। एक्सपेरिमेंटल लर्निंग को महत्वपूर्ण स्थान राष्ट्रीय शिक्षा नीति में दिया गया है। पुस्तकालय समृद्ध होना चाहिए। कार्यक्रम में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर हरि बहादुर श्रीवास्तव ने कहा है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति ज्ञान कौशल के उत्थान की नीति है।

रोजगार परक पाठ्यक्रम के माध्यमों से युवाओं को रोजगार के अवसर पढ़ाई के साथ साथ मिल सकता हैं। उन्होंने कहा कि किसी राष्ट्र की गुणवत्ता उसकी शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। शिक्षा की गुणवत्ता उसके शिक्षक की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति वास्तव में भारत के वर्तमान और भविष्य की नीव रखने वाली है। उन्होंने कहा कि मेरा पहला प्रयास होगा कि विश्वविद्यालय को तकनीकी दृष्टि से समृद्ध करें ताकि यहां के शिक्षक विद्यार्थी देश दुनिया के चल रहे विविध प्रकल्प से प्रतिस्पर्धा करते हुए ज्ञान और कौशल के साथ क्षेत्र और विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा बढ़ाएं।

कार्यक्रम में विषय प्रस्तावना राष्ट्रीय शिक्षा नीति विश्वविद्यालय परिसर के नोडल अधिकारी एवं अधिष्ठाता कला संकाय प्रोफेसर हरीश कुमार शर्मा ने प्रस्तुत करते हुए कहा की अंतर विषयक शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षक और विद्यार्थियों को अपने ज्ञान और कौशल रूचि के अनुसार निर्मित और निश्चित करने का अवसर प्रदान करती है।कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम संयोजक डॉ अविनाश प्रताप सिंह ने किया एव आभार ज्ञापन सहसंयोजक डॉक्टर सरिता सिंह ने किया ।ऑनलाइन व्याख्यान कार्यक्रम में तकनीकी सहयोग सत्यम दीक्षित एवं अतुल रावत ने किया। इस अवसर पर शिक्षक राजशरण शाही उपस्थित रहे एव विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक तथा संबद्ध महाविद्यालयों के शिक्षक व छात्र-छात्राएं जुड़े रहे। इस का लाइव प्रसारण से विश्वविद्यालय के फेसबुक और यूटयूब पर भी किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आनलाइन व्याख्यान आयोजित

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थ विश्व विद्यालय कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर मे भारत सरकार के शिक्षा मत्रालय के मंशा अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विभिन्न आयामों को लेकर व्याख्यान श्रृखला के छठवे दिन ष्उच्च शिक्षा मे गुणवत्ता सुनिश्चित तथा शिक्षकों मे व्यवसायिक गुणवत्ता सम विकासष् विषय पर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली के परिसियन भाषा विभाग के डीन तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मसौदा समिति के सदस्य प्रोफेसर मजहर आसिफ ने कहा कि भारत की गौरवशाली परपरा एवं समृद्ध इतिहास रहा है। भारत के जीवन दृष्टि मे पृथ्वी के सभी प्राणियों के प्रति सदभाव की भावना रही है।भारत में हमेशा ज्ञान संस्कृति और धर्म मार्गदर्शक की भूमिका मे रहे है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति मे मातृभाषा पर अत्यधिक बल दिया गया है। अब विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त कर सकता है। कौशल विकास केंद्र की स्थापना विश्वविद्यालयो मे बहुत आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति

में गुणवत्ता बढाने के लिए मल्टीप्ल एंट्री और मल्टीप्ल एग्जिट का अवसर विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्वतंत्रता है। परीक्षा और मूल्यांकन प्रणाली में भी पारदर्शिता होनी चाहिए शिक्षक चयन मे भी पारदर्शिता अपरिहार्य है। एक्सपेरिमेंटल लर्निंग को महत्वपूर्ण स्थान राष्ट्रीय शिक्षा नीति मे दिया गया है। पुस्तकालय समृद्ध होना चाहिए। कार्यक्रम मे अध्यक्षीय उदबोधन देते हुए सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर हरि बहादुर श्रीवास्तव ने कहा है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति ज्ञान कौशल के उत्थान की नीति है। रोजगार परक पाठ्यक्रम के माध्यमों से युवाओं को रोजगार के अवसर पढ़ाई के साथ साथ मिल सकता है। उन्होंने कहा कि किसी राष्ट्र की गुणवत्ता उसकी शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। शिक्षा की गुणवत्ता उसके शिक्षक की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति वास्तव मे भारत के वर्तमान और भविष्य की नीव रखने वाली है।

उन्होंने कहा कि मेरा पहला प्रयास होगा कि विश्वविद्यालय को तकनीकी दृष्टि से समृद्ध करें ताकि यहा के शिक्षक विद्यार्थी देश दुनिया के चल रहे विविध प्रकल्प से प्रतिस्पर्धा करते हुए ज्ञान और कौशल के साथ क्षेत्र और विश्व विद्यालय की प्रतिष्ठा बढाएं ।कार्यक्रम में विषय प्रस्तावना राष्ट्रीय शिक्षा नीति विश्वविद्यालय परिसर के नोडल अधिकारी एवं अधिष्ठाता कला संकाय प्रोफेसर हरीश कुमार शर्मा ने प्रस्तुत करते हुए कहा की अतर विषयक शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षक और विद्यार्थियों को अपने ज्ञान और कौशल रूचि के अनुसार निर्मित और निश्चित करने का अवसर प्रदान करती है।कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम संयोजक डॉ अविनाश प्रताप सिंह ने किया एव आभार ज्ञापन सहसंयोजक डॉक्टर सरिता सिंह ने किया ।ऑनलाइन व्याख्यान कार्यक्रम में तकनीकी सहयोग सत्यम दीक्षित एवं अतुल रावत ने किया। इस अवसर पर शिक्षक राजशरण शाही उपस्थित रहे एव विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक तथा संबद्ध महाविद्यालयों के शिक्षक व छात्र–छात्राएं जुड़े रहे। इस का लाइव प्रसारण से विश्वविद्यालय के फेसबुक और यूटयूब पर भी किया गया।